पढ़ाई बोझ न बने, इसकी कोशिश

'जश्न-ए-तालीम' जो बात बता सकी है वह विज्ञान को मजा लेकर सीखने की बात है, करके सीखने की बात है, सीखने के आनंद की बात है। अलग तरह की पाठ्य पुस्तकों और परीक्षा पद्धति को विकसित करने के साथ शिक्षकों को अलग तरह से प्रशिक्षित करने की प्रक्रियाओं का वर्णन यहां है।

हमारी शिक्षा पद्धति कुछ ऐसी है कि निर्धारित पाठ्य-पुस्तकों के आधार पर शिक्षक कक्षा में ज्ञान परोस दिया करते हैं और विद्यार्थी उन्हें रट-रटकर परीक्षा-दर-परीक्षा पास करते रहते हैं और डॉक्टर-इंजीनियर-क्लर्क इत्यादि पदों पर सुशोभित हो जाते हैं। हमारी पद्धति में प्रयोग सीखने का अवकाश दिया ही नहीं जाता है। प्रयोगशालाओं में कराए गए प्रयोग भी किताबी ज्ञान पर आधारित होते हैं। करके सीखने की बात यहां भी गायब होती है। ऐसे में 'होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम' के द्वारा विकसित की गई 'कर के सीखने' की शिक्षा पद्धति हमारा ध्यान आकर्षित करती है। विज्ञान-शिक्षा के लिए विकसित की गई यह पद्धति विद्यार्थियों को किताबी कीड़ा और रट्टमल बनाने की बजाय खेतों-जंगलों में घूमकर और प्रयोग से प्राप्त निष्कर्षों से ज्ञान प्राप्त करने का वातावरण देती है। हालांकि यह सवाल यहां मौजूं लगता है कि 'होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम' केवल विज्ञान-शिक्षा को लेकर क्यों चल रहा था? भाषा, गणित, समाज शास्त्र आदि विषयों को शिक्षा पद्धति के उसी दायरे में लाने की बात क्यों नहीं की गई थी? और जब यह प्रयोग विद्यालयों में चल रहा था, तब विद्यार्थी भाषा, गणित, इतिहास, भूगोल और समाज-शास्त्र पुरानी पद्धति से ही रट-रटकर क्यों सीख रहे थे? परीक्षा के लिए विज्ञान के लिए अलग तरह की पद्धति अपनाई गई थी, वह तो अच्छी बात थी, लेकिन विद्यार्थी अन्य विषयों की परीक्षा पुरानी पद्धति से ही क्यों दे रहे थे?...इन सवालों का कोई जवाब 'होशंगाबाद विज्ञान का शैक्षिक सफरनामा' प्रस्तुत करने वाली सुशील जोशी की किताब 'जश्न-ए-तालीम' नहीं दे सकी है।

पुस्तक : जश्न-ए-तालीम
लेखक : सशील जोशी
प्रकाशक : एकलव्य, ई-10, बीडीए कॉलोनी, शंकर नगर, भोपाल-16
मूल्य : 160 रुपए

'जश्न-ए-तालीम' जो बात बता सकी है वह विज्ञान को मजा लेकर सीखने की बात है, करके सीखने की बात है, सीखने के आनंद की बात है। हो.वि.शि.का. की पूर्वपीठिका, इसकी स्थापना, इसकी गतिविधियां और इसके बंद होने की बात तो इस किताब में है ही, सीखने और सिखाने के लिए किए गए प्रयोगों का विवरण भी इस किताब में दिया गया है। अलग तरह की पाठ्य पुस्तकों और परीक्षा पद्धति को विकसित करने के साथ-साथ शिक्षकों को अलग तरह से प्रशिक्षित करने की प्रक्रियाओं का वर्णन भी इस किताब में किया गया है। हो.वि.शि.का. की विशेषता था कि वहां शिक्षक सर्वज्ञ की भूमिका में नहीं थे। उन्हें भी प्रयोग करने के बाद ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचना था। उन्हें जो पाठ्य पुस्तकें उपलब्ध कराई गई थीं उनमें ज्ञान ठूंस-ठूंसकर भरा हुआ नहीं था। वहां बार-बार निरीक्षण-परीक्षा की बात की गई थी। बहुत जरूरी होने पर कुछ निष्कर्ष, कुछ परिभाषाएं भी दी गई थीं, लेकिन अधिकांशतः इनसे बचने की कोशिश की गई थी। सीखने के लिए परिभ्रमण की भूमिका भी यहां रेखांकित की गई थी और विद्यार्थियों को इस भूमिका से परिचित भी कराया गया था। इसी तरह अकेले बैठकर पढ़ने की बजाय टोली में बैठकर सीखने की पद्धति भी यहां अपनाई गई थी। हस्त-कौशल को बढ़ावा दिया गया था।

परीक्षा के समय पाठ्य पुस्तक साथ रखने की छूट थी, लेकिन परीक्षा में न तो वैसे सवाल ही पूछे जाते थे जो सीधे-सीधे पाठ्य पुस्तकों से होते थे या उनके जवाब वहां से नकल किए जा सकते थे। परीक्षा में जवाब देते हुए विद्यार्थियों के द्वारा किए गए निरीक्षण और प्रयोग ही काम में आते थे।

ऐसी शिक्षा और परीक्षा विद्यार्थियों की चेतना को विकसित करने के लिहाज से जितनी जरूरी है, उतनी गैर जरूरी पारंपरिक शिक्षा पद्धति में विश्वास करने वाले अभिभावकों और सरकारों के लिए। संभवतः इसीलिए हो.वि.शि.का. को मध्य प्रदेश सरकार ने 2002 में बंद कर दिया जबकि ऐसे कार्यक्रमों को और अधिक विकसित करने की आवश्यकता है। सभी विषयों और सभी स्तरों पर ऐसी शिक्षा पद्धति की दरकार है। हां, ऐसी शिक्षा पद्धति विकसित करते हुए उन समस्याओं, उन मुश्किलों और उन कमियों को दूर करने की भी जरूरत है जिनसे हो.वि.शि.का. को गुजरना पड़ा था। 'समर हिल', 'तोतोचान', 'दिवा स्वप्न' और 'हो.वि.शि.का.' जैसे प्रयोगों से कुछ-कुछ तत्व ग्रहण कर बनाई गई शिक्षा पद्धति ही वास्तव में शिक्षा की आदर्श पद्धति हो सकती है। ऐसी शिक्षा पद्धति ही शिक्षा के बोझ को जश्न में बदल सकती है।

संजीव ठाकुर